"नृत्य"

• निरति करी इह मन नचाई । गुर परसादी आप गवाई । चित थिर राखै सो मुकति होवै जो इछी सोई फल पाई ।1।

अर्थ:- हे भाई ! रास धारिए रास डाल - डाल के नाचते हैं और भक्त कहलवाते हैं मैं भी नाचता हूँ पर शरीर को नचाने की जगह मैं अपने इस मन को नचाता हूँ भाव, गुरु की कृपा से अपने अंदर से मैं स्वैभाव दूर करता हूँ, और इस तरह मैं जो भी इच्छा करता हूँ परमात्मा के दर से वही फल पा लेता हूँ । हे भाई ! रासों में नाचने कूदने से मुक्ति नहीं मिलती, ना

ही कोई भक्त बन सकता है जो मनुष्य चित्त को प्रभु - चरणों में अडोल रखता है वह माया के बंधनों से खलासी का आशावान हो जाता है ।

नाच रे मन गुर के आगै । गुर के भावै नाचहि ता सुख पावहि अंते जम भउ भागै । रहाउ ।

अर्थः- हे मन ! गुरु की हजूरी में नाच गुरु के हुक्म में चल हे मन ! अगर तू वैसे नाचेगा जैसे गुरु नचाएगा अगर तू गुरु के हुक्म में चलेगा तो आनंद पाएगा आखिरी वक्त पर मौत का डर भी तुझसे दूर भाग जाएगा ।

आपि नचाए सो भगत कहीऐ आपणा पिआस आपि लाए । आपे गावै आपि सुवावै इस मन अंधे कउ मारगि पाए ।2।

अर्थः- हे भाई ! जिस मनुष्य को परमात्मा अपने इशारों पर चलाता है जिस मनुष्य को अपने चरणों का प्यार बख्शता है वह मनुष्य दरअसल भक्त कहा जा सकता है । परमात्मा खुद ही उस मनुष्य के वास्ते, रजा में चलने का गीत गाता है । खुद ही यह गीत उस मनुष्य को सुनाता है, और माया के मोह में अंधे हुए इस मन को सही जीवन - राह पर लाता है ।

अनदिन नाचै सकति निवारै सिव घरि नीद न होई । सकती घरि जगत सूता नाचै टापै अवरो गावै मनमुखि भगति न होई ।3।

अर्थः- हे भाई ! जो मनुष्य हर वक्त परमात्मा की रजा में चलता है वह अपने अंदर से माया का प्रभाव दूर कर लेता है । हे भाई ! कल्याण स्वरूप प्रभु के चरणों में जुड़ने से माया के मोह की नींद हावी नहीं हो सकती । जगत माया के मोह में सोया हुआ माया के हाथों पे नाचता - कूदता है

दुनियावी दौड़ - भाग करता रहता है । हे भाई ! अपने मन के पीछे चलने वाले मनुष्य से परमात्मा की भक्ति नहीं हो सकती ।

सुरि नर विरति पखि करमी नाचे मुनि जन गिआन बीचारी । सिध साधिक लिव लागी नाचे जिन गुरमुखि बुधि वीचारी ।4।

अर्थः- हे भाई ! दैवी स्वभाव वाले मनुष्य दुनियावी काम - कार करते हुए भी, ऋषि मुनि लोग आत्मिक जीवन की सूझ से विचारवान हो के, परमात्मा की कृपा से परमात्मा की रजा में चलने वाला नाच नाचते हैं । आत्मिक जीवन की तलाश के वास्ते साधन करने के समय जो मनुष्य गुरु के द्वारा श्रेष्ठ बुद्धि प्राप्त करके विचारवान हो जाते हैं उनकी तवज्जो प्रभु - चरणों में जुड़ी रहती है, वह भी रजा में चलने वाला नाच नाचते हैं ।

खंड ब्रहंमड त्रै गुण नाचे जिन लागी हरि लिव तुमारी । जीअ जंत सभे ही नाचे नाचहि खाणी चारी ।5।

अर्थः- हे प्रभु ! सारे जीव - जंतु माया के हाथों पर नाच रहे हैं, चारों खाणियों के जीव नाच रहे हैं, खण्डों - ब्रहमण्डों के सारे जीव त्रिगुणी माया के प्रभाव में नाच रहे हैं पर, हे प्रभु ! जिन्हें तेरे चरणों की लगन लगी है वह तेरी रजा में चलने का नाच नाचते हैं ।

जो तुध भावहि सेई नाचहि जिन गुरमुखि लिव लाए । से भगत से तत गिआनी जिन कउ हुकम मनाए ।6।

अर्थः- हे प्रभु ! जो मनुष्य तुझे प्यारे लगते हैं वही तेरे इशारे पर चलते हैं । हे भाई ! जिन मनुष्यों को गुरु के सन्मुख करके, गुरु के शब्द में जोड़ के अपने चरणों की प्रीति बख्शता है, जिन्हें अपना भाणा मीठा करके मनाता है वही मनुष्य असल भक्त हैं रासों में नाचने वाले भक्त नहीं

हैं, वही मनुष्य सारे जगत के मूल परमात्मा के साथ गहरी समीपता बनाए रखते हैं ।

एहा भगति सचे सिउ लिव लागै बिन सेवा भगति न होई ।
जीवत मरै ता सबद बीचारै ता सच पावै कोई ।

अर्थः- हे भाई ! वही उत्तम भक्ति कहलवा सकती है जिसके द्वारा सदा स्थिर रहने वाले परमात्मा सें प्यार बना रहे । ऐसी भक्ति गुरु की बताई सेवा करे बिना नहीं हो सकती । जब मनुष्य दुनिया की मेहनत कमाई करता हुआ ही माया के मोह की ओर से अछोह हो जाता है तब वह गुरु के शब्द को अपने सोच मण्डल में टिकाए रखता है, तब ही मनुष्य सदा कायम रहने वाले परमात्मा का मिलाप हासल करता है ।

माइआ कै अरथि बहुत लोक नाचे को विरला तत बीचारी ।
गुर परसादी सोई जन पाए जिन कउ किृपा तुमारी ।४।

अर्थः- हे भाई ! माया कमाने की खातिर तो बहुत सी दुनिया माया के हाथों पर नाच रही है, कोई विरला मनुष्य है जो असल आत्मिक जीवन को पहचानता है । हे प्रभु ! वही वही मनुष्य गुरु की कृपा से तेरा मिलाप हासिल करता है जिस पर तेरी मेहर होती है ।

इक दम साचा वीसरे सा वेला बिरथा जाई । साहि साहि सदा समालीऐ आपे बखसे करे रजाई ।१।

अर्थः- हे भाई ! जो भी एक सांस सदा कायम रहने वाले परमात्मा को भूला रहे वह समय व्यर्थ चला जाता है । हरेक सांस के साथ परमात्मा को अपने दिल में बसा के रखना चाहिए । पर ये उद्यम वही मनुष्य कर सकता है जिस पर परमात्मा खुद ही मेहर करके बख्शिश करे ।

सेई नाचहि जो तुध भावहि जि गुरमुखि सबद वीचारी ।
कहु नानक से सहज सुख पावहि जिन कउ नदरि तुमारी ।

अर्थः- हे प्रभु ! जो मनुष्य तुझे अच्छे लगते हैं वही तेरी रजा में चलते हैं क्योंकि वे गुरु की शरण पड़ कर गुरु के शब्द को अपनी सोच - मण्डल में टिका लेते हैं । हे नानक ! कह हे प्रभु ! जिस पर तेरी मेहर की नजर पड़ती है वह मनुष्य आत्मिक अडोलता का आनंद पाते हैं । (3-506)

(पाठी माँ साहिबा)

हक हक हक

(शब्द गुरु प्रत्यक्षता)

ऐक शब्द

उपरोक्त अर्थों में कहे गये गुरू-सतगुरू-शबद-नाम-सच्चा नाम इत्यादि विशेष - विशेषो का केवल और केवल ऐक ही अर्थ विशेष है कि - "रागमई प्रकाशित सुगंधित आवाज़ विशेष" । इसके आलावा सारे अर्थ केवल मनमत हैं - गुरूमत का इससे कोई संबंध विशेष नहीं हैं ।

"सबद गुरू - सुरत धुन चेला । गुण गोबिंद - नाम धुन बाणी ।"